इकाई 23 पर्यावरण एवं सतत विकास

संरचना

23.1 प्रस्तावना

23.2 विकास का प्रासांगीकरण

- 23.2.1 आभासी विकास
- 23.2.2 वास्तविक विकास
  - 23.2.2.1 सामान्य वास्तविक विकास
  - 23.2.2.2 विशिष्ट वास्तविक विकास

23.3 सतत विकास : अवधारणा

- 23.3.1 सतत विकास की अवधारणा
- 23.3.2 संसृत दृष्टिकोण
- 23.3.3 सतत विकास के सिद्धांत

23.4 सतत विकास : संसृत दृष्टिकोण

- 23.4.1 विकसित विश्व का परिदृश्य
- 23.4.2 विकासशील विश्व का परिदृश्य

23.5 सतत विकास-संबंधी संकेतों की कार्य-सूची

23.6 सारांश

23.7 अभ्यास प्रश्न

23.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में सतत-विकास संकल्पना के क्रम-विकास तथा वर्तमान विधियों जिनसे यह इंगित किया अथवा मापा जाता है, पर चर्चा है। विकसित एवं विकासशील देशों द्वारा अपनाए गए भिन्न-भिन्न एवं परस्पर विरोधी दृष्टिकोणों पर भी चर्चा है। शुरू-शुरू में औद्योगिक विकास संबंधी विचार का समाज की सभी बुराइयों को जड़ से खत्म करने हेतु प्रचण्डता से प्रचार किया गया, परन्तु इसके लिए अपनाई विधियाँ एवं नीतियाँ अपव्ययी और मानव के नितांत अस्तित्व के प्रति खतरा बन गयीं। इस विपत्ति की बढ़ती जागरूकता के साथ ही, विश्व समुदाय इस समस्या को कम करने हेतु चर्चा करने एवं अनेक कार्ययोजनाएँ प्रतिपादित करने के लिए एक मंच पर आया। आज सतत-विकास संकल्पना विकास के संबंधी हर क्षेत्र की नीतियों में एकीकृत हो गया है क्योंकि मानव का नितांत अस्तित्व इसी पर निर्भर है। इसी कारण इस संकल्पना को समझना और अपनाना अत्यावश्यक है।

23.2 विकास का प्रासांगीकरण

राज्य-नीति संबंधी एक संकल्पना एवं दृष्टिकोण के रूप में 'विकास' आधुनिक मनोदशा पर एक सुखद प्रभाव रखता है। विकास का जादूई मंत्र उद्योग, कृषि, परिवहन एवं संचार, अंतरिक्ष, स्वास्थ्य, स्वास्थ्य-विज्ञान संस्कृति एवं पर्यावरण, इत्यादि के क्षेत्र में हर मानव सफलता के पीछे जीवंत शक्ति के रूप में समझा जाता है। इन

बातों के साथ-साथ, यह यथासंभव कम समय में समाज व परिवेश के सम्पूर्णप्राय कायान्तरण को नियंत्रित करने व हाथ में लेने संबंधी विजयोल्लास भाव भी दिल में जगाता है। विकासलिंग, वर्ग, वर्ण, जाति व धर्म-सिद्धांत के भेदों पर ध्यान न देते हुए, जन कल्याण में राज्य के मामलों का कार्यसंचालन करने संबंधी धर्म निरपेक्ष एवं युक्तिसंगत उपाय के रूप में हर व्यक्ति द्वारा स्वीकार किया जाता है। विकास को सदियों से बढ़ती सभी मुसीबतों का एकमात्र उपाय माना जाता है और उससे यह उम्मीद की जाती है कि वह उन दोषों को कम करे जो किसी वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र व व्यक्ति में साभिप्राय अथवा अन्यथा आ गए हैं। यह बात कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी कि 'विकास' जैसा कोई अन्य विचार शायद नहीं है जिसने इतने कम विरोध के साथ एक भूमण्डलीय स्तर पर अभूतपूर्व लोकप्रियता, सफलता व स्वीकरण प्राप्त किया हो। यह क्रीड़ायोग्य एक ऐसा खेल माना जाता है जिसमें सभी विजेता माने होते हैं और कोई हारने वाला नहीं होता। इसी कारण, यह एक जारी रखने योग्य जोखिमकार्य है।

मानव इतिहास के आख्यान किस्सों व घटनाओं से भरे पड़े हैं जो एक मूल्य-सिद्धांत के किसी अन्य मूल्य-सिद्धांत एवं जीवकोपार्जन के साधनों पर प्रभुत्व को सुसाध्य बनाने के बाद एक भूमण्डलीय स्तर पर प्रमुख संकल्पना के रूप में विकास-संबंधी विचार किस प्रकार उभरा इस बात की भरपूर चर्चा करते हैं। इसको अभूतपूर्व कहा जा सकता है क्योंकि इसका इतने लम्बे समय से, इतने बड़े स्तर पर और अपने इतने कम विरोध के साथ एक इतनी ईर्ष्य अवस्था में बने रहकर आनन्द प्राप्त करना जारी है। यह अब तक की शायद एक मात्र संकल्पना है जो परिवेश व समाज दोनों की समग्रता को एक अनन्य समुच्च के दायरे में लायी है। यह एक भूमण्डलीय सृष्टि के निर्माण में सफल रहा है, जिस काम को करने में धर्म भी विफल रहा।

23.2.1 आभासी विकास

विकास आधुनिक मन-मस्तिष्क पर एक सम्मोहनकारी प्रभाव डालता है। इसको हमारी सभी सामाजिक बुराइयों हेतु रामबाण के रूप में मूल्यांकित किया जाता है और हर एक व्यक्ति एवं संस्था के प्रत्येक कार्य को सही ठहराने हेतु कारण के रूप में प्रचारित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, इसको हमारे सभी कृत्यों का वैध-सिद्धक भी समझा जाता है।

विकास का जादू इतना व्यापक हो गया है कि अधिकतर विचारक इसके अभाव को ही उन सभी सामाजिक-संस्कृतिक, राजनीतिक-आर्थिक, मनोवैज्ञानिक व पर्यावरणीय समस्याओं का मूल कारक मानते हैं, जो संसार में अधिकांश क्षेत्रों व समुदायों के सामने हैं। यद्यपि, इस प्रकार की मन:स्थिति का श्रीगणेश मानव जाति पर गत तीन शताब्दियों से भी अधिक पूर्व प्रथम विश्व व्यवस्था के रूप में पूँजीवादी विकासानुक्रम के साथ ही हो गया था, फिर भी बुनियादी राज्य-नीति सिद्धांत एवं किसी व्यवस्था-विशेष की विचारधारा के रूप में इसका औपचारिक स्वीकरण 1945 में द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति पर 33वें अमेरिकी राष्ट्रपति, हैरी एस. ट्रूमैन द्वारा दिए गए एक भाषण के उपरांत ही प्रभाव में आया। ट्रूमैन ने विकास को एक नया अर्थ प्रदान किया और इसके बाद, इसे राज्य-नीति के लक्ष्य रूप में औपचारिक रूप से स्वीकृत और उसे राज्य के दर्शन व विचारधारा के आधार रूप में समाविष्ट कर लिया गया। यह तथाकथित 'विकास दशकों', 'विकास परियोजनाओं' संबंधी आरम्भ 'विकास समुदायों' के गठन, के औपचारिक उद्घाटन के समय में ही पड़ा। उसके बाद से ही, विकास दरिद्रता, शोषण, आपराधिकता एवं अन्य सभी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ़ लड़ाई लड़ने में और सर्वोपरि मानव की प्रकृति व उसकी प्रकाण्ड शक्तियों पर परम विजय में और "नए भूमण्डलीय आधिपत्यों" के समेकन में भी एक प्रभावशाली अस्त्र के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। इसने पुरानी विचारधारा एवं बर्तानिया-शांति *(पैक्स ब्रितानिका)* के तर्क को विफल कर दिया जो स्पैनिश आर्मदा, 1588 के समय से ही प्रचलित था। इसके स्थान पर अमरीकी-शांति *(पैक्स अमेरिकाना)* आ गया। नए नेतृत्व के लोकाचार एवं आचार-शास्त्र इतने सम्पूर्ण व समग्र थे कि विकास को अर्थशास्त्र, राजनीति व संस्कृति के क्षेत्र में न सिर्फ मानव मात्र के बल्कि उनके सपनों व कल्पनाओं के भी, क्रम-विकास में अन्तिम अथवा लक्ष्य-बिन्दु माना गया। यह संकल्पना इतनी

मेलखाती उभरी कि मानव इतिहास के क्रम-विकास में ऐसे किसी संसार और पड़ाव की मुश्किल से ही कल्पना की जा सकती है जो विकास के इर्दगिर्द न बुना गया हो। युग की आत्मा को यदि एक वाक्य में कहा जाए तो 'विकास ही अस्तित्व है'। इस प्रकार इसको अनालोचनात्मक रूप से स्वीकार किया जाता है और इससे किसी भी प्रकार के खिंचाव को अननुपालन और शासक सामाजिक लोकाचार एवं भूमण्डलीय नेतृत्व के साथ असहमति माना जाता है। परिणमत: विकास का अभाव गंभीर अड़चन और असमर्थता के रूप में समझा जाता है। ऐसे समुदाय व राष्ट्र जो गतिरोध की जिच को खोल पाने में असमर्थ होते हैं, इसके अतिरिक्त, विकास का अभाव कम विकल्प, स्वतंत्रता की काट-छाँट और मानवाधिकारों के गंभीर उल्लंघन का भी पर्यावाची है।

23.2.2 वास्तविक विकास

दुर्भाग्यवश विकास के साथ हर चीज़ आनन्दप्रद और अनुकूल नहीं थी। राज्य-सत्ता के समर्थन से जुड़ी अन्य जीवन-रीतियों, मूल्य-पद्धतियों तथा भौतिक अस्तित्व की ओर प्रशंसा एवं सहष्णुता के अभाव ने विकास को एक साधारण आर्थिक-सम्पन्नता सिद्धांत से एक निरंकुश, मानव स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा एवं पारिस्थितिक संतुलन के भंजक में बदल दिया। इरावती कर्वे, प्रसिद्ध पर्यावरणविद् ने कहा था, "आदर्शवादियों, देशभक्तों, संतो, एवं धर्मयोद्धाओं द्वारा किये गए अन्याय बुरे से बुरे आतताइयों द्वारा किए गए अन्यायों से कहीं अधिक है।'' यह बात विकास के मामले में भी सत्य है। नोबेल भूषित अमर्त्य सेन ने अपनी पुस्तक " डिवेलॅपमेण्ट ऐज़ फ्रीडम'' में मत व्यक्त किया है कि विकास को अक्सर स्वतंत्रता, सशक्तीकरण एवं लोकतंत्र के लिए एक पूर्व-शर्त माना जाता है। 1992 में पर्यावरण विषयक रियो पृथ्वी सम्मेलन में भी यही भावनाएँ पुनर्श्रुत्यावृत्त हुईं। इस सम्मेलन में मानवता को इन शब्दों में चेतावनी दी गई : "विश्व वैज्ञानिक एवं राजनीतिज्ञ ध्यान-मग्न रहे और मानवता का भी ध्यान परमाणु युद्धों एवं 'ऑस्चवित्ज़' के खतरों की ओर नहीं जाने दिया तथा अन्य खतरों की ओर से भी चुप्पी साधे रखी। वे नए खतरे जिनसे मानवता को खतरा है, गतिमान विकास की नितांत प्रक्रिया से उभरे हैं। मानव मात्र एवं प्राकृतिक संसार में टक्कर है।''

इस प्रकार, जब शान्तिमय दिन बीत जायेंगे तो विकास का कृष्ण पक्ष अधिक सुप्रकट हो जाएगा।

23.2.2.1 सामान्य वास्तविक विकास

आज विकास का मतलब है जन-शान्ति *(पैक्स पॉपुलाइ)* की कीमत पर अर्थ-शान्ति *(पैक्स इकॉन्मिका)*। इस बात को सिद्ध करने हेतु पर्याप्त साक्ष्य हैं कि भूमण्डलीय स्तर पर विभिन्न वर्तमान विकास परियोजनाओं की दो समरूप सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण 'उपलब्धियाँ' और सर्वव्यापी अभिशाप हैं : i) पारिस्थितिक विपदा की ओर ले जाता प्रदूषण और ii) मानव जाति का वैश्वीकृत अन्यत्रभाव एवं सर्वनाश। गतिमान विकास संबंधी आख्यान और उसके साथ चल रही विभिन्न परियोजनाएँ उन्मूलनवाद को मानव सभ्यता में अन्तिम चरण बनाने हेतु उत्तरदायी हैं। उन्मूलनवाद न सिर्फ परमाणु बम के प्रयोग एवं रेडियोधर्मी सामग्री के विसर्जन के माध्यम से ही हो रहा है बल्कि उन विभिन्न विकास कार्यों के माध्यम से भी हो रहा है जो भूमण्डलीय तापन, ओज़ोन अपचयन, जल, मृदा, वायु व अन्य खाद्य वस्तुओं को दूषण को प्रवृत्त करते नाना प्रकार के पर्यावरण हेतु उत्तरदायी हैं। यदि इन प्रक्रियाओं को नियंत्रित नहीं किया जाता है तो पराबैंगनी विकिरण के स्तर में वृद्धि समेत पारिस्थितिक संकटों के कारण उन्मूलनवाद पर्यावरण और मानवता दोनों के लिए घोर संकट पैदा करेगा तथा मानव सभ्यता में यह अंतिम पड़ाव होगा। इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं कि हरित-गृह गैसों के स्तर में वृद्धि, रोगोपचार हेतु दवाओं के बढ़ते प्रयोग के साथ-साथ पराबैंगनी विकिरणों, कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु उर्वरकों एवं कीटनाशकों की अत्यधिक खपत के परिणामस्वरूप जैव संसार के एक बड़े हिस्से में अनुवांशिक विकृतियाँ तथा अनेक प्रजातियों का विलोपन देखने में आया है। इसके अतिरिक्त, भूमण्डलीय नियंत्रक शक्तियाँ अन्य अर्थव्यवस्थाओं, संस्कृतियों, संसाधनों, पर्यावरण एवं कमज़ोर व्यक्ति, समुदाय व राष्ट्रों के परम प्रभुत्व आदि पर पहुँच बनाने के लिए विकास आदि नीतियाँ अपना रहे हैं। आज विकास एक सशक्त संकल्पना के रूप में उभरा है जो लगातार सम्पन्नों एवं विपन्नों के बीच एक पक्की दरार डाल रहा है और उसे मजबूत भी

कर रहा है। अपने निजी स्वार्थों को साधने के लिए नए उपनिवेशों के निर्माण एवं पुनर्निर्माण हेतु शक्तिशाली देशों की यह एक नीति है।

23.2.2.2 विशिष्ट वास्तविक विकास

यहाँ एक खास पहलू है जो अब तक हुए विकास के विषय में कम ही सामने आया है। यह उन तरीकों से जुड़ा है जो मानवमात्र के सार्वभौमिक एवं सामान्यीकृत अन्यत्रभाव, हर एक प्राणी के जीवन एवं काया स्थान को थोपने में अग्रगण्य रहे। विकास के प्रभावी लोकाचार के चलते मनुष्य, जिन्सों का रचयिता, जिन्सों द्वारा रचित गुमनामी में खो गया है। आज मनुष्य जीवन व पहचान, दोनों से वंचित है जबकि उसके द्वारा पैदा की गई जिन्सों के पास दोनों ही चीजें उपलब्ध हैं। मनुष्य के सार्वभौमिक एवं सामान्यीकृत पण्यीकरण के चलते, व्यक्तियों एवं सामाजिक समूहों के बीच अभी तक भेद कायम हैं। विकास ने न सिर्फ विकसित एवं विकासशील देशों के लोगों के बीच बल्कि पुरुष व महिलाओं, गोरे व काले, अधिवासियों व प्रवासियों, शहरी व ग्रामीण, कृषि व औद्योगिक कर्मियों, आदि के बीच भी एक पुख्ता दरार पैदा कर दी है। यद्यपि विकास विश्व को एक भूमण्डलीय व्यवस्था में एकीकृत करने में सफल हुआ है तथापि यह सिर्फ़ एक देश व दूसरे देश के नागरिकों के बीच तथा एक देश विशेष के ही लोगों के बीच स्थायी विभाजन पैदा करके ही संभव हुआ है। मनुष्यजन प्रजाति, वर्ग, जाति, मत, धर्म, भाषा, लिंग व अतीत की आर्थिक उपलब्धियों आदि आधारों पर विभाजित एवं विभेदीकृत रहे हैं। आधुनिक मानव अपने विकास स्तरों तथा विकासार्थ अनिवार्य ज्ञान व साधनों पर नियंत्रण हेतु अपनी क्षमता में अपनी भिन्नताओं पर विभाजित एवं विभेदीकृत हैं। विकास विकसित एवं पिछड़े देशों, तथा विकसित एवं पिछड़े समुदायों के बीच एक सभ्यतापरक एवं सांस्कृतिक विभाजन बन गया है। विकास की तर्क-संगति हेतु सत्य, कुछेक की सम्पन्नता व धनाढ्यता दुर्दमनीय जनसंख्याधिक्य, धर्मों व देशों के कल्याण की लागत पर ही संभव है। पुन: विकास-संबंधी तर्क हेतु यह अत्यावश्यक है कि एक बहुत छोटे से अल्पसंख्यक समूह की उच्च जीवन-गुणवत्ता एक बड़े से बहुसंख्यक समूह की निम्न जीवन गुणवत्ता एवं गिरते जीवन-स्तर की लागत पर संभाव्य हो। चंद लोगों का आर्थिक लाभ वृहत भूमण्डलीय पर्यावरण अवमूल्यन करने पर ही निर्भर है। इसके अतिरिक्त, यह भी देखने में आया है कि आर्थिक सम्पन्नता मानव सभ्यता, मूल्यों एवं शांतचित्तता की लागत पर ही आयी है। आर्थिक विकास, विकास परियोजना के सारतत्व, ने अपना हर एक अर्थ और प्रयोजन खो दिया लगता है। वर्तमान विकास प्रतिमान यह दर्शाता है कि मानव कल्याण एवं स्वतंत्रता के मूल उद्देश्य अपने रास्ते से भटक गए हैं। गुणवत्तात्मक वृद्धि, 1980 के दशक में प्रत्येक आर्थिक जोखिम की सर्वोच्च प्राथमिकता, भी दुनियाभर के लाखों लोगों के लिए महज़ धोखा ही साबित हुई। इसके निकृष्टतम भुक्तभोगी धरती के वे हत-भाग्य व्यक्ति ही हैं जिसमें से अधिकांश उपनिवेश-पश्चात् देशों के निवासी हैं। हम शांतिरहित नीतियों एवं धनाढ्यता वाले अर्थशास्त्र के युग में रह रहे हैं। संक्षिप्तत:, विकास अपनी प्रगतिमान संभावनाओं से चुक गया है। वह मनुष्य एवं पर्यावरण दोनों के लिए असतत हो गया है। इसी कारण तुरंत एक विकल्प तलाशे जाने की जरूरत है।

23.3 सतत विकास : अवधारणा

23.3.1 सतत विकास की अवधारणा

अर्थ-शान्ति एवं जन-शान्ति तथा विकास एवं पर्यावरण के बीच कायम विरोधात्मक संबंध ही एक लम्बे समय से विचारकों के लिए मुख्य विषय रहा है। अथवा, दूसरे शब्दों में : आर्थिक विकास को एक मानवीय रूप कैसे प्रदान करें? अपने विचारों मे अभिनव कैसे हों? अपने पर्यावरण को नुकसान पहुँचाये बग़ैर अपनी सुख-शांति, स्वतंत्रता एवं कल्याण में कैसे वृद्धि करें, आदि? एक लम्बे समय से विचारकों के लिए यही मुख्य मुद्दे रहे हैं। सतत विकास ही दरअसल इस प्रश्न से जुड़ा है। अथवा एक वाक्य में कहें तो कल्याण के वर्तमान स्तर को कैसे कायम रखें और इसे सभी के लिए कैसे मुहैया कराएँ।

सतत विकास संबंधी संकल्पना के उद्‌गम का श्रेय संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण एवं विकास विषयक विश्व आयोग के तत्त्वावधान में ब्रुन्त्लैण्ड आयोग की रिपोर्ट को जाता है। इस रिपोर्ट के अनुसार सतत विकास का अर्थ है :

> *विकास जो भावी पीढ़ियों की योग्यता पर समझौता किए बग़ैर उनकी अपनी ज़रूरतों को पूरा करने, सभी के लिए उन्नत जीवन-स्तर, बेहतर रक्षित व नियंत्रित पारितंत्र तथा एक अधिक सुरक्षित, अधिक सम्पन्न भविष्य पाने के लिए वर्तमान की आवश्यकताएँ पूरी करता है।*

इस सम्मेलन के निष्कर्ष इस अनुभव पर आधारित थे कि :

> *आर्थिक गतिविधियाँ सदा की भाँति व्यापार के झण्डे तले और अधिक नहीं चल सकतीं। विशेषतौर पर अब यह समर्थनीय नहीं है कि आर्थिक वृद्धि को आर्थिक विकास नीति का नि:शंक विषय बना दिया जाए, जैसा कि पारम्परिक रूप से माना और मापा जाता था। वृद्धि की पुरानी संकल्पना जिसे हम ऊर्जा व अन्य प्राकृतिक उपादानों के एक सदावर्धमान मुक्तप्रस्ताव पर भरोसा रखने वाली 'मुक्त-प्रस्ताव वृद्धि' कहते हैं, जारी नहीं रखी जा सकती है और उसे उन आर्थिक साध्यों का एक काल्पनिक परिप्रेक्ष्य तैयार करना आवश्यक है जो कम संसाधन-साधित हों। जिस तरीके से हम प्रकृति व प्राकृतिक पूँजीगत सेवाओं का मूल्य कम आँकते हैं और प्राकृतिक परिसम्पत्तियों के अवमूल्यन की जिम्मेदारी से बचते हैं, उसका प्राय: अर्थ यह होता है कि हम स्वयं की उन्नति कर रहे हैं जबकि कल्पना यह कर रहे होते हैं कि हमारी अर्थव्यवस्थाएँ तरक्की कर रही हैं। नए उपगम्य को आवश्यकता है एक समेकित प्रयास की जो पर्यावरणीय रूप से सदय गतिविधियों की दिशा में उपभोक्ताओं की प्राथमिकता एवं पथ-प्रदर्शित करती माँगों के पुनर्गढ़न पर आधारित हो, जबकि साथ के साथ सेवाओं समेत प्रति इकाई अन्तिम उत्पाद मुक्त-प्रस्ताव को घटाने पर भी।''*

स्थिति की गंभीरता को विश्व समुदाय द्वारा काफी महत्त्व दिया गया और यह महसूस किया गया कि कोई भी व्यक्ति, समुदाय व राष्ट्र चाहे जितना भी अमीर या शक्तिशाली हो, सतत विकास प्रक्रिया द्वारा होने वाली हानियों को नहीं मिटा सकता। यह भी अनुभव किया गया कि "हम सब साथ मिलकर ही सतत विकास हेतु एक भूमण्डलीय भागीदारी में शामिल हो सकते हैं''।

23.3.2 संसृत दृष्टिकोण

गत तीन शताब्दियों में मनुष्य की भौतिक उपलब्धियों के विषय में विद्वानों के बीच मतैक्य है। इन उपलब्धियों के बीच 20वीं सदी की उपलब्धियाँ शानदार हैं। परन्तु, यह वृहद सामाजिक व पर्यावरणीय लागत पर ही संभव हुआ है। विद्वानों ने सदा ही अल्पावधि भौतिक सम्पन्नता विषयक अपनी आशंकाएँ व्यक्त की हैं और आमतौर पर लोगों को सन्निकट खतरों व भावी संकटों के बारे में चेताया है। सतत विकास लाने के लिए अपनाये जाने वाले उपगम्यों पर विद्वानों व दार्शनिकों के बीच मतभेद हैं। निपट भौतिकवादी के लिए लोगों ने आध्यात्मिक से लेकर नैतिक तक अनेक रुख अपनाये हैं। गाँधीजी, उदाहरण के लिए, एक नैतिकवादी अवस्था ग्रहण करने के पक्ष में थे जब उन्होंने कहा, "धरती के पास मानवीय आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए पर्याप्त है परन्तु साथ ही एक भी व्यक्ति के प्रलोभन को पूरा करने के लिए कतई कुछ नहीं।'' उनका उपगम्य अहिंसा व सत्य के व्यापक सिद्धांतों पर आधारित था। उनके अनुसार, विकास के पाश्चात्य उपगम्य ने दिमाग़ को हाथों से ऊपर, आदमी को कुदरत से ऊपर और प्रौद्योगिकी को तजुर्बे से ऊपर रखा है। यही हमारे नैतिक ह्रास और असतत विकास का भी मूल कारण है। गाँधीजी हर एक मानवीय कृत्य के लिए नैतिक तर्कसंगति के पक्षधर थे और उसके पक्षधर थे और उनके अनुसार प्रौद्योगिकी-प्रेरित विकास का पाश्चात्य आदर्श, जो मुख्य रूप से मानवीय प्रलोभन तुष्टि के सिद्धांत पर आधारित है, अनैतिक होने के साथ-साथ मानववाद एवं प्रकृति के भी खिलाफ़ है।

दूसरे छोर पर वे लोग थे जो "होना मतलब रखना" संबंधी तत्त्वज्ञान का समर्थन करते थे। इस तत्त्वज्ञान के पक्षधरों के अनुसार प्रौद्योगिक क्रांतियों ने विशेषकर गत तीन शताब्दियों में आधुनिक मानव को सभी संभव सुख व सम्भावनाएँ उपलब्ध कराई। आज हम तीन सौ साल पहले के अपने मूल्यों की अपेक्षा अधिक संतुष्टिभाव, आत्मविश्वास रखते हैं और अधिक स्वतंत्रता का भी उपभोग करते हैं। आधुनिक मानव नई प्रौद्योगिकी की हरेक तरक्कीयाता खुराक के साथ समय व स्थान, दोनों पर काबू करने में सफल हुआ है। प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को बदल डाला है। यह नया अस्तित्व नए विकल्पों यथा अधिक स्वतंत्रता पर आधारित है।

इन दो छोरों के बीच कई अन्य दृष्टिकोण भी हैं। तथापि, उन पुरगामियों में जिन्होंने इस दिशा में यथार्थ व गंभीर प्रयास किए, 1972 में, रोम में एक समूह रूप में विद्वजन थे। इसको लोकप्रिय रूप "क्लब ऑव रोम" कहा जाता था। उनके विचार तदोपरांत, मीडोज़ कृत "लिमिट्स टु ग्रोथ" नामक पुस्तक में प्रकाशित हुए। इन विद्वानों ने विकास-संबंधी प्रचलित प्रतिमान की सीमाओं के विषय में चेताया और यदि वर्तमान असीम वृद्धि का प्रतिमान कायम रहा तो इसकी निरन्तरता-संबंधी समस्या पैदा हो जाएगी। उन्होंने भूमण्डलीय जनसंख्या, कृषि, संसाधन प्रयोग एवं उद्योग में वृद्धि की बुनियादी सीमाओं का अध्ययन किया और दर्शाया कि किस प्रकार ये कारक एक-दूसरे से अन्तर्क्रिया करते हैं और किस प्रकार वे हमारे ग्रह के सीमित संसाधन आधार पर दबाव डालते हैं। इस रिपोर्ट ने निष्कर्ष दिया कि उन्नत प्रौद्योगिकी के वरदान विषयक सर्वाधिक आशावादी मान्यताओं के अन्तर्गत रहकर भी, विश्व एक ओर वर्तमान आर्थिक व जनसंख्या वृद्धि दरों का तथा दूसरी ओर संसाधन समाप्ति व पारिस्थितिक संकटों का समर्थन करने व उन्हें कायम रखने में असमर्थ है। उन्होंने आगे चेतावनी दी कि यदि उपभोग की वर्तमान प्रवृत्ति कायम रही तो हमारे ग्रह पर संसाधन अब से कुछ दशकों तक भी नहीं चलेंगे। इसी कारण, उन्होंने इस सन्निकट गतिरोध से निकलने का उपाय भी सुझाया, जो उनके अनुसार सभी समस्याओं से एक साथ निबटने में निहित है, न कि किसी टुकड़े-टुकड़े प्रयास वाले उपगम्य को अपनाने में। तदनुसार, उसी वर्ष स्टॉकहोम में हुए पर्यावरण प्रचलित विकास प्रतिमानों के विषय में गंभीर चिन्ता व्यक्त की गई। सम्मेलन ने प्रचलित विकास रीति के प्रतिमानों का एक विशेष उल्लेख किया जिन्होंने एक ओर पर्यावरण पर अत्यधिक दबाव डाला है और दूसरी ओर विकसित व विकासशील देशों के बीच खाई को चौड़ा किया है।

23.3.3 सतत विकास के सिद्धांत

इस गंभीर स्थिति के अहसास का परिणाम था 'एजेण्डा 21 : ग्रीन पाथ्स टु द यूचर' यानी रियो घोषणा, 1992। यद्यपि इस घोषणा का अनेक विशिष्टताएँ हैं परन्तु इसका विशोधित सत्व निम्नलिखित सत्ताइस सिद्धांतों में प्रस्तुत है :

- सतत विकास संबंधी विषय के केन्द्र में मनुष्य ही है। वह प्रकृति से सामञ्जस्य रख एक स्वस्थकर और उत्पादनकारी जीवन का हक़दार है।
- संयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र व अन्तरराष्ट्रीय कानूनों के सिद्धांतों के अनुसार राज्य विकास के लिए अपने संसाधन प्रयोग करने हेतु सर्वासत्ताक अधिकार रखता है। यह भी राज्य का ही दायित्व है कि पर्यावरण के प्रति होने वाले किसी भी नुकसान को रोके।
- विकास का अधिकार अंतर-पुश्तीय समदृष्टि रखकर ही सिद्ध किया जाना चाहिए।
- सतत विकास लाने के लिए पर्यावरण रक्षा को विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा बनना चाहिए।
- दरिद्रता उन्मूलन सतत विकास के लिए एक अपरिहार्य आवश्यकता है। राज्यों व व्यक्ति के बीच सहयोग लोगों के जीवन-स्तर को सुधारने में ज़्यादा कारगर सिद्ध हो सकता है।
- अल्पतम विकसित देश भी पर्यावरणीय रूप से सर्वाधिक नाजुक हैं। अन्तरराष्ट्रीय समुदायों को विशेष ध्यान देना चाहिए और इन देशों की ज़रूरतें ज़ाहिर करने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

- राज्य पृथ्वी के पारितंत्र के स्वास्थ्य व अखण्डता की रक्षा करने व पुनप्राप्ति करने हेतु भूमण्डलीय भागीदारी की भावना रखते हुए सहयोग करेंगे। विकसित देशों को ज़्यादा जिम्मेदारियों का निर्वाह करना चाहिए क्योंकि उनकी गतिविधियाँ भूमण्डलीय पर्यावरण पर ज़्यादा दबाव डालती हैं।

- सतत विकास लाने के लिए यह राज्यों की ही ज़िम्मेदारी है कि सभी लोगों की सदा-वर्धमान उच्च जीवन-गुणवत्ता पर समझौता किए बग़ैर उत्पादन व उपभोग के असतत प्रतिमानों को कम करें और दूर करें।

- प्रौद्योगिकी में नवीकरण समेत उनके वर्धन, अनुकूलन, मिश्रण व हस्तांतरण हेतु उचित वैज्ञानिक मनोदशा बनाकर राज्यों को सतत विकास हेतु अन्तर्वर्धमान क्षमता-निर्माण उपायों को मज़बूत करने में सहयोग करना चाहिए।

- पर्यावरण ही हरेक व्यक्ति का चिंतनीय विषय हो और इस मताल्लिक़ मुद्दे समुचित स्तरों पर संबद्ध नागरिकों की भागीदारी के माध्यम से निबटाये जाएँ। तथापि, यह राज्य का दायित्व है कि संकटमय वस्तुओं के ख़तरों व उनके लिए संभाव्य उपायों को लेकर लोगों के बीच समुचित सूचना मुहैया कराये और जागरूकता को प्रेरित करे।

- हर राज्य प्रभावी पर्यावरणीय विधान बनाये। वह यह भी निर्णय करे कि क्या कुछ देशों द्वारा अपनाये गए विद्यमान विभेदकारी विधान का औचित्य है, खासकर ज़्यादा ग़रीब देशों के खिलाफ।

- आर्थिक वृद्धि सतत विकास से जुड़ी हो। राज्य सुनिश्चित करें कि भूमण्डलीय आर्थिक प्रणाली खासकर विश्व बाज़ार संबंध व व्यापार नीतियाँ जो गरीब देशों के खिलाफ विभेदकारी हैं, सतत विकास लाने के लिए बदली जाएँ।

- राज्य उनको दण्डित करने के लिए कानून बनाए जो पर्यावरणीय प्रदूषणों व पर्यावरणीय हानि के लिए उत्तरदायी हैं और पर्यावरणीय अवनति के पीड़ितों को समुचित रूप से क्षतिपूर्ति हेतु प्रावधान रखे।

- राज्य उन पदार्थों के हस्तांतरण को सक्रिय रूप में निरुत्साहित करे जो मनुष्य के लिए हानिकर पाये जाते हैं और पर्यावरणीय अध:पतन के कारण बनते हैं।

- हर राज्य को अपने क्षमताओं पर निर्भर रहकर अपने पर्यावरण की रक्षा के ऐतिहाती उपाय करने होंगे। तथापि, वैज्ञानिक तकनीक का अभाव और तकनीकी पिछड़ापन उन गतिविधियों को चलाने के लिए बहाना नहीं होंगी जो पर्यावरण के प्रति एक आनन्ददायक घटना होती हैं और अनिवर्त्य हानियों में परिणत होती हैं।

- राष्ट्रीय प्राधिकरणों को कुल उत्पादन लागत के हिस्से के रूप में पर्यावरण लागतों के अन्तरराष्ट्रीयकरण हेतु काम करना चाहिए।

- पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन राष्ट्रीय आर्थिक नीति का एक अभिन्न हिस्सा बन जाएगा।

- प्राकृतिक आपदा के समय यह राज्य का दायित्व है कि ऐसे अन्य राज्यों से सूचना का आदान-प्रदान करे जो इस प्रकार की आपदाओं से प्रभावित होने की संभावना रखते हैं। इस प्रकार प्रभावित राज्यों की मदद को अन्तरराष्ट्रीय समुदायों को आगे आना चाहिए।

- राज्यों के बीच पर्यावरणीय मुद्दों के संबंध में सूचना का आदान-प्रदान उन राज्यों के बीच नेकनीयती जगाने पर आधारित होगा।

- पर्यावरणीय प्रबंधन, सतत विकास एवं लैंगिक सशक्तीकरण अन्तर्निर्भर हैं। इन तीनों में महिलाओं को केन्द्र में रखा जाए।
- दुनियाभर के युवा सतत विकास को लागू करने हेतु ज़्यादा जिम्मेदारी रखते हैं क्योंकि यह मुख्यत: उन्हीं की पीढ़ी है, जो पारिस्थितिक आपदाओं की आसन्न-पीड़ित और भुक्तभोगी होने वाली है।
- व्यक्ति की पहचान की रक्षा संबंधी अधिकार ही सतत विकास का आधार होना चाहिए। यह विशेष रूप से देशज समुदायों हेतु प्रयोज्य है। हर राज्य को देशज ज्ञान व प्रथाओं को मान्यता देने के समुचित उपाय करने चाहिए और इस समुदायों को सतत विकास की सफलता में शामिल करना चाहिए।
- लोगों की स्वतंत्रता में उत्पीड़कों द्वारा उनके आधिपत्य, प्रग्रहण व उत्पीड़न की समाप्ति तथा उनका पर्यावरण शामिल होंगे। पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों पर सम्पूर्ण अधिकारों की पुनर्प्राप्ति ही स्वतंत्रता की संकल्पना का हिस्सा होना चाहिए।
- युद्ध व सतत विकास परस्पर विरोधी हैं। हर राज्य को सुनिश्चित करना चाहिए कि युद्ध के समय पर्यावरण की कम से कम हानि हो।
- शांति, विकास एवं पर्यावरण रक्षा अन्तर्निर्भर और अविभाज्य हैं।
- सभी राज्य संयुक्त राष्ट्रसंघ के घोषणापत्र के अनुसार ही शांतिपूर्ण तरीकों से अपने पर्यावरणीय विवाद हल करेंगे।
- अन्तत: यह हर व्यक्ति व राज्य से सतत विकास लाने के लिए सहयोग करने व नेकनीयती पर आधारित भागीदारी विकसित करने हेतु अपील करता है।

इक्कीसवीं शती हेतु विकास कार्यसूची निर्धारित करना विश्व समुदाय की ओर से किए जा रहे सर्वाधिक गंभीर व समेकित प्रयासों में से एक था। कुछ बातों के लिहाज से यह एक महत्त्वपूर्ण एवं साहसपूर्ण निर्णय था क्योंकि यह राष्ट्रों के उच्च रूप से विषमांगी समुदाय के बीच मतैक्य के बिना काम चलाने में सफल रहा था।

23.4 सतत विकास : संसृत दृष्टिकोण

उक्त सम्मेलन की कार्यवाहियों में भाग लेने वाले 160 से भी अधिक देश थे और सम्मेलन-स्थल पर प्रसार में निश्चित रूप से कम से कम 480 से भी अधिक कार्यसूची मदें थीं। अपने-अपने राज्यों के सरकारी प्रतिनिधियों द्वारा पटल पर रखे गए 160 प्रस्ताव थे। तदोपरांत 160 ऐसे प्रस्तावों का एक सेट और था जो संबद्ध राज्यों में मतभेद के स्वर से खुल्लम-खुल्ला अथवा गुप्त रूप से व्यक्त किए गए। अभी 160 ऐसे प्रस्तावों का एक सेट और था, जो हर देश के गैर-सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) द्वारा पेश किए गए थे। अत:, यह निर्णायक रूप से इस प्रकार के किसी विवादग्रस्त विषय पर सर्वसम्मत्ति पर पहुँचने हेतु संयुक्त राष्ट्रसंघ के सामने सर्वाधिक कठिन कार्यों में से एक था। तथापि, मतभेद की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण धारा सतत विकास पर विकसित एवं विकासशील देशों के संदर्शों के बीच फूटी।

23.4.1 विकसित विश्व का परिदृश्य

विकसित देशों ने अपनी विशेषाधिकारप्राप्त स्थिति बरकरार रखी और वे किसी भी चीज पर समझौता करने को राजी नहीं थे क्योंकि उनका विचार था कि इन देशों में उच्च जीवन-स्तर कायम रखने के लिए यह हानिकारक सिद्ध होगा। दरअसल, उन्होंने भूमण्डलीय पर्यावरण हेतु एक गंभीर खतरे के रूप में ज्यादा देशों

में बढ़ती जनसंख्या पर अधिकतर दोष थोपा। वे सतत विकास को एक स्वस्थकर जीवन हेतु प्रदूषण-मुक्त पर्यावरण की पुनर्प्राप्ति के दृष्टिकोण से देखते हैं।

23.4.2 विकासशील विश्व का परिदृश्य

इसके विरोध में विकासशील देशों के संदर्श ने एक नाटकीय रूप से विपरीत तस्वीर दिखाई। इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यापार, पर्यावरण, संसाधनों, अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिक, ज्ञान व नीतियों, आदि पर विकसित विश्व का आधिपत्यपूर्ण नियंत्रण ही भूमण्डलीय पर्यावरण, शांति एवं विकास के प्रति एकमात्र सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ख़तरा है। उन्हें एक सुरक्षित एवं संरक्षित पर्यावरण की आवश्यकता है क्योंकि यही उनकी वैयक्तिक एवं सामाजिक उत्तरजीविता का आधार है। यह महसूस किया गया है कि अधिकांशत: विकसित विश्व द्वारा शुरू की गई वर्तमान विकसित परियोजनाओं के कारण ही पर्यावरण के वर्धमान विनाश के साथ, उपनिवेश-पश्चात् देशों में ग़रीबी, भुखमरी व लालसा की घटनाओं में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। विकसित देशों के बीच एक आशंका व्याप्त है कि उदारीकरण, भूमण्डलीकरण एवं निजीकरण के नाम पर, विश्व पूँजीवाद उपनिवेश बनाने में लगा है। परन्तु अब ये नए उपनिवेश सिर्फ़ भौगोलिक स्थानों तक ही सीमित नहीं है वरन् जैविक ढाँचे एवं स्वयं जीवन के औपनिवेशीकरण प्रक्रियाओं को भी अपने में शामिल करते हैं। पर्यावरण और उपनिवेश-पश्चात् देशों में रहने वाले देशज समुदायों के भी उन्हें उपलब्ध समुचित प्रौद्योगिकी की इच्छा हेतु नई एकस्वकृत शासन-प्रणाली में ख़तरा है। इस प्रकार, विकासशील देशों के मामले में पर्यावरण एवं सतत विकास का प्रश्न जटिल रूप से अपनी स्वतंत्रता, पहचान एवं अस्तित्व कायम रखने से जुड़ा है।

23.5 सतत विकास संबंधी संकेतों की कार्य सूची

उपर्युक्त मुद्दों से परे, दूसरा विवादग्रस्त मुद्दा था : सतत विकास की पैमाइश कैसे करें? अथवा दूसरे शब्दों में, सतत विकास के संकेतक क्या हैं? पुन:, सतत विकास को मापने हेतु चुने जाने वाले संकेतकों की प्रकृति के साथ-साथ उनकी संख्या विषयक किसी सर्वसम्मति पर पहुँचना मुश्किल था। संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्त्वावधान में एशिया व प्रशांत आर्थिक एवं सामाजिक आयोग ने सतत विकास के संकेतकों की एक कार्यसूची तैयार की। यह काम सतत विकास आयोग (सी.एस.डी.) के सतत विकास संकेतों पर कार्यक्रम के तहत किया गया।

तालिका 1 : सी.एस.डी. विषय संकेतक ढाँचा

सामाजिक		
विषय	उप-विषय	संकेतक
समदृष्टि	दरिद्रता	ग़रीबी-रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत
		आय असमानता की गिनी इण्डैक्स
		बेरोज़गारी दर
	लैंगिक समानता	औसत नारी वेतन के प्रति पुरुष वेतन का अनुपात
स्वास्थ्य	पोषण-संबंधी स्थिति	बच्चों की पोषण-संबंधी स्थिति

	नैतिकता	5 वर्ष की उम्र से कम की मृत्यु दर
		जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा
	स्वच्छता	उचित मलव्ययन सुविधाओं वाली जनसंख्या का प्रतिशत
	पेयजल	सुरक्षित पेयजल प्राप्त जनसंख्या
	स्वास्थ्य-रक्षा प्रसव	प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा सुविधाएँ प्राप्त जनसंख्या का प्रतिशत
		रोगों के खिलाफ प्रतिरक्षा
		गर्भ निरोधक प्रचलन दर
शिक्षा	शिक्षा-स्तर	प्राथमिक शिक्षा के कक्षा 5 तक पहुँचने वाले बच्चे
		वयस्क अनुपूरक शिक्षा प्राप्ति स्तर
	साक्षरता	वयस्क साक्षरता दर
आवास	निर्वाह-योग्य दशाएँ	प्रति व्यक्ति फर्श क्षेत्रफल
सुरक्षा	अपराध	प्रति 100,000 जनसंख्या दर्ज अपराधों की संख्या
जनसंख्या	जनसंख्या परिवर्तन	जनसंख्या वृद्धि दर
		शहरी औपचारिक एवं अनौपचारिक रिहाइशों की जनसंख्या

पर्यावरण-संबंधी		
विषय	**उप-विषय**	**संकेतक**
वातावरण	जलवायु परिवर्तन	हरित-गृह **गैसों का उत्सर्जन**
	ओज़ोन परत क्षय	ओज़ोन क्षयकारी पदार्थों की खपत
	वायु गुणवत्ता	शहरी क्षेत्रों में वायु-प्रदूषण का परिवेशी संकेन्द्रण
भूमि	कृषि	जोत्य व स्थायी फसल भूमि क्षेत्र
		उर्वरकों का प्रयोग
		कृषीय कीटनाशकों का प्रयोग
	वन	भूमि क्षेत्र के प्रतिशत रूप में वन क्षेत्र

		काष्ठ उपज प्रचण्डता
	मरुस्थलीकरण	मरुस्थलीकरण द्वारा प्रभावित भूमि
	शहरीकरण	शहरी औपचारिक एवं अनौपचारिक रिहाइशी क्षेत्र
महासागर, समुद्र एवं तट	तटीय क्षेत्र	तटीय समुद्र में शैवाल संकेन्द्रण
		तटीय क्षेत्रों में रहने वाली कुल जनसंख्या का प्रतिशत
	मत्स्य क्षेत्र	प्रमुख प्रजातियों के अनुसार वार्षिक पकड़
ताज़ा जल	जल मात्रा	कुल उपलब्ध जल प्रतिशत के रूप में भूमिगत व सतही जल का वार्षिक दोहन
	जल गुणवत्ता	जल निकायों में बी. ओ. डी.
		ताज़े जल में फीकल कोलाइफॉर्म का संकेंद्रण
जैव-भिन्नता	पारितंत्र	चुनींदा मुख्य पारितंत्रों का क्षेत्र
		कुल क्षेत्र प्रतिशत के रूप में संरक्षित क्षेत्र
	प्रजातियाँ	चुनींदा मुख्य प्रजातियों की प्रचुरता

आर्थिक		
विषय	**उप-विषय**	**संकेतक**
आर्थिक सुधार	आर्थिक निष्पादन	प्रति व्यक्ति जी.डी.पी.
		जी.डी.पी. में निवेश का हिस्सा
	व्यापार	माल व सेवाओं में व्यापार संतुलन
	वित्तीय स्थिति	जी.एन.पी. अनुपात के प्रति देनदारी
		जी.एन.पी. प्रतिशत रूप में प्रदत्त या प्राप्त कुल ओ.डी.ए.
उपभोग एवं उत्पादन प्रतिमान	भौतिक खपत	भौतिक प्रयोग की प्रचण्डता
	ऊर्जा-प्रयोग	प्रति व्यक्ति वार्षिक ऊर्जा खपत
		पुनर्नव्य ऊर्जा संसाधनों के उपभोग का भाग
		ऊर्जा प्रयोग की प्रचण्डता

	कचरा उत्पादन एवं प्रबंधन	हानिकारक कचरे का उत्पादन
		रेडियोधर्मी कचरे का प्रबंधन
		कचरा पुनर्नवीकरण एवं पुनर्प्रयोग
	परिवहन	परिवहन के साधन द्वारा प्रतिव्यक्ति तय की गई दूरी

संस्थागत		
विषय	उप-विषय	संकेतक
संस्थागत ढाँचा	एस.डी. की रणनीतिक अभिपूर्ति	राष्ट्रीय सतत विध्य रणनीति
	अंतरराष्ट्रीय सहयोग	पुष्टीकृत भूमण्डलीय समझौतों का परिचालन
संस्थागत क्षमता	सूचक उपगम्य	प्रति 1000 निवासी इंटरनेट ग्राहकों की संख्या
	संचार ढाँचा	प्रति 1000 निवासी मुख्य दूरभाष लाइनें
	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	जी.डी.पी. प्रतिशत के रूप में अनुसंधान एवं विकास पर व्यय
	आपदा तत्परता व प्रत्युत्तर	प्राकृतिक आपदाओं के कारण आर्थिक एवं मानवीय क्षति

स्रोत : http://www.un.org/esa/sustdev/natlinfo/indicators/isdms2001/table_4.htm

ऊपर दी गई संकेतक-सूची से यह स्पष्ट है कि सतत विकास केवल एक सम्पूर्ण बहु-फलक उपगम्य के माध्यम से ही संभव है। अनेक विद्वानों द्वारा सुझावित किसी भी उपगम्य में उस बात की कमी है जो जीवन की गुणवत्ता और पर्यावरण संपन्नता कायम रखने के लिए कम से कम ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, परिसम्पत्तियों के स्टॉक की देख-रेख करते समय आय के अधिकतम प्रवाह विषयक हिक्स-लिण्डाल द्वारा प्रतिपादित सतत विकास हेतु आर्थिक उपगम्य को लेते हैं। इस उपगम्य में अन्तर्निहित धारणा उन संसाधनों की आर्थिक क्षमता को सुधारना है जो दुर्लभ रूप से प्राप्य हैं। यह दिए गए दूसरे संबद्ध कारकों को भी लेता है। इसके विपरीत पर्यावरणीय उपगम्य जैविक व भौतिक समवायों की स्थिरता और सर्वोपरि एक भूमण्डलीय पारितंत्र के सातत्य, जैव-भिन्नता का संरक्षण आदि पर ज़ोर देता है। यह उपगम्य अन्य मध्यस्थ कारकों को भी उपान्तिक महत्त्व देता है। सामाजिक-सांस्कृतिक उपगम्य के नाम से प्रसिद्ध एक और भी उपगम्य है जो विनाशात्मक संघर्षों को घटाना शामिल करते हुए सामाजिक-सांस्कृतिक प्रणालियों के रखरखाव पर ज़ोर देता है। इस उपगम्य के सूत्रधार के अनुसार भूमण्डल पर सांस्कृतिक वैविध्य का संरक्षण सतत विकास हेतु एक पूर्वशर्त है। पुन: यह उपगम्य भी अपनी समग्रता में विषय को समाविष्ट करने में विफल रहा।

इन सभी उपगम्यों पर एक आलोचनात्मक दृष्टि इसीलिए यह सुझाव देती है कि "एक उपगम्य की बजाय हमें उपगम्यों के सेट की बात करनी चाहिए क्योंकि प्रौद्योगिकी पीढ़ी बदलती रहती है''। इस प्रकार, सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, संयुक्त राष्ट्रसंघ के आर्थिक एवं सामाजिक आयोग द्वारा सुझावित संकेतक-सूची अन्य किसी की उपगम्य से अधिक स्वीकार्य लगती है।

23.6 सारांश

"सतत विकास" एक नारा बन चुका है क्योंकि यह मनुष्यों, उनकी सभ्यता एवं उस नितांत पर्यावरण जिसका वह अभिन्न भाग है, से सीधे जुड़ा है। तथाकथित विकास के नाम पर हुआ है वृहद्-स्तरीय वनोन्मूलन, वातावरणीय परिवर्तन जैसे जीवन-रक्षक ओज़ोन परत का पतला होना, जैव वैविध्य में कमी, उस कचरे की बढ़ती मात्रा जो दिन प्रति दिन काबू से बाहर होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त, मानवीय कृत्यों ने हमारे पर्यावरण के जीवनाधार समवायों को विषैला कर दिया है, नामत: मृदा, वायु, जल एवं जीव। इन सब में ज़्यादा हैरत में डालने वाली बात यह है कि इस प्रकार की सामाजिक एवं पर्यावरणीय लागत पर किए गए आर्थिक लाभ दुनिया की आबादी के महज एक छोटे से तक ही सीमित हैं। संसार की आबादी का बड़ा हिस्सा अब भी शाश्वत दरिद्रता, क्षुधा एवं भुखमरी में जी रहा है। संसार भर में हर वर्ष लाखों लोग अपने जीवन की बुनियादी ज़रूरतों की इच्छा लिए मर रहे हैं। बहुतायत और गंदगी का एक साथ और एक ही समय सहअस्तित्व भी सामाजिक तनावों एवं हिंसा के नए रूप को जन्म दे रहा है। आतंकवाद, हिंसा का एक प्रचण्डतम रूप, एक-पक्षीय भूमण्डलीय नियंत्रण के पीड़ितों की अनिवार्यत: एक ग़ैरकानूनी गतिविधि है। इसी कारण, सतत विकास ही, यदि समुचित रूप से लिया जाए, सामाजिक न्याय एवं पर्यावरणीय संरक्षण के साथ विकास की कुंजी है। यह मानव मात्र के लिए सुरक्षित भविष्य की भी कुंजी है।

23.7 अभ्यास प्रश्न

1) सतत विकास से आप क्या समझते हैं?

2) सतत विकास की अवधारणा ने कैसे जन्म लिया?

3) विकासित एवं विकासशील विश्व के संदर्श सतत विकास की संकल्पना के लिहाज से किस प्रकार भिन्न हैं?

4) सतत विकास के संकेतक क्या हैं?